ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

(शोध पत्रिका)

SANSKRITIK PRAVAH

Research Journal

Volume-2 No.2 August, 2015

Bi- annual Bi-lingual

A Multi Disciplinary Refereed Research Journal Dedicated to Socio-Cultural Harmony.

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर

All India Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)

Subscription Rate

Institution & Library	-	Rs. 2200 (5 years)
Research Scholars/ Students	-	Rs. 900 (5 years)
Teachers / Others	-	Rs. 900 (5 years)
Single Copy	-	Rs. 125/-

Subscription may be sent by cheques/drafts drawn in favour of
Editor, Sanskritik Pravah, Jaipur

The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and the **'Sanskritik Pravah'** accepts no responsibility for them.

Correspondence and Contact

सांस्कृतिक प्रवाह

803, वेदांग हाईट्स, नन्दपुरी, प्रताप सर्किल के पास,
प्रतापनगर, जयपुर (राजस्थान) 302033
e-mail : editor.sprj@gmail.com
website : www.sisnet.co.in
Contact : 0141-2973369 (Off.), 094143-12288 (Chief Editor)
09414350711 (Editor)

Published by : Prof. Ashutosh Pant, Secretary
All India Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)
803, Vedang Heights, Nandpuri, Pratapnagar, Jaipur-302033

Printed at : Kumar & Company, Jaipur

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

(शोध पत्रिका)

वर्ष 2 अंक 2 अगस्त 2015

अर्द्धवार्षिक द्वि-भाषी

सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय के लिए
समर्पित एक बहु-विषयात्मक शोध पत्रिका

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान,

803, वेदांग हाईट्स, नन्दपुरी, प्रताप सर्किल के पास, प्रतापनगर, जयपुर (राजस्थान) 302033

Sanskritik Pravah

Patron

Sh. Ram Prasad	:	Mentor & Guardian, Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur

Editorial Advisory Board

Prof. M. L. Chhipa	:	Vice Chancellor A.B. Vajpeyi Hindi University, Bhopal (M.P.)
Dr. Kuldeep Chand Agnihotri	:	Vice Chancellor, Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala (H.P.)
Prof. Bhagirath Singh	:	Vice Chancellor Raffles University, Nimrana (Raj.)
Prof. P. K. Dashora	:	Vice Chancellor, Kota University, Kota (Raj.)
Prof. J. P. Sharma	:	Rtd. Professor & Head, Deptt. of Economic Admin. & Financial Management, University of Rajasthan, Jaipur
Prof. K.G. Sharma	:	Professor & Head, Deptt. of History & Indian Culture University of Rajasthan, Jaipur
Padamshri Mujaffar Husain	:	Journalist & Vice Chairman, National Council for Promotion of Urdu Language, HRD Ministry, New Delhi

Chief Editor

Sh. Ram Swaroop Agrawal	:	Ex- Principal, Govt. Law College, Kota & Sriganganagar (Raj.)

Editor

Dr. Vinod Kumar Sharma	:	Associate Professor & H.O.D., Jyotish Vibhag J.R. Rajasthan Sanskrit University, Jaipur

Managing Editor

Dr. Jagdish Narayan Vijay	:	Asstt. Registrar J.R. Rajasthan Sanskrit University, Jaipur

Editorial Assistance

Dr. G. S. Gupta	:	Research Assistant, Centre for Rajasthan Studies University of Rajasthan, Jaipur

Editorial Board

Prof. Ashutosh Pant	:	Director, S. K. Technical Campus, Sitapura, Jaipur
Dr. Sheela Rai	:	Associate Professor, Deptt. of Pol. Science, University of Rajasthan, Jaipur
Dr. Sunil Asopa	:	Associate Professor, Deptt. of Law J.N.V. University, Jodhpur
Dr. Premlata Swarnkar	:	Lecturer, Geography, Govt. Meera Girls College, Udaipur

अनुक्रमणिका/ CONTENTS

पृष्ठ संख्या

सम्पादकीय : धार्मिक जनगणना के निहितार्थ 7

1. वंश बहियों में विभिन्न लिपियों एवं अभिलेखों का अद्‌भुत संग्रह - सूकरक्षेत्र (सोरोंजी) के संदर्भ में 9
 - डॉ. राधाकृष्ण दीक्षित

2. धर्म प्रचार का अधिकार (Right to Propagate)- भ्रांतियाँ एवं विश्लेषण (संविधान सभा में हुई बहस के सन्दर्भ में) 22
 - रामस्वरूप अग्रवाल

3. लोक आस्था के स्वरूप भगवान विष्णु के अवतार श्री देवनारायण जी 42
 - डॉ. कैलाश चन्द गुर्जर

4. कुटुम्ब प्रबोधन संस्कृति- एक अध्ययन (संस्कृत व हिन्दी साहित्य के विशेष संदर्भ में) 50
 - डॉ. विनोद कुमार शर्मा

5. युगदृष्टा कबीर का मानववादी चिंतन 66
 - डॉ. बुद्धि प्रकाश गोस्वामी

6. परिवार संबंधी वैदिक अवधारणा की प्रासंगिकता 72
 - डॉ. स्नेहलता शर्मा

7. Forced Conversions- collection of various incidents 82
 - Dr.Jayendrasinh Jadeja

8. Folk Narrative of Rajasthan and Tribal Women- with special reference to Nayak Bhils (Bhopa) 89
 - Dr.Priyanka Mathur

9. पुस्तक समीक्षा : सौहार्दपूर्ण जीवन के लिए राष्ट्रीय समन्वय (एम. रामाजोईस) 95
 - डॉ. लेखा अग्रवाल

10. पाठकीय 97

11. गतिविधि 98

लेखक परिचय

1. **डॉ. जयेन्द्रसिंह जडेजा**
   एम.डी. (फिजियोलोजी)
   उपनिदेशक, राज्य मेडिकल शिक्षा एवं शोध, गांधीनगर (गुजरात)

3. **डॉ. राधाकृष्ण दीक्षित**
   एसोसिएट प्रोफेसर
   के. ए. (पी.जी.) कॉलेज, कासगंज (उ.प्र.)

2. **रामस्वरूप अग्रवाल**
   पूर्व प्राचार्य
   राजकीय विधि महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

4. **डॉ. विनोद कुमार शर्मा**
   सह आचार्य–ज्योतिष
   जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राज. संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

5. **डॉ. स्नेहलता शर्मा**
   सहायक आचार्य
   जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राज. संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

6. **डॉ. लेखा अग्रवाल**
   विभागाध्यक्ष–समाजशास्त्र
   राजकीय महाविद्यालय, जयपुर (राज.)

7. **डॉ. कैलाश चन्द गुर्जर**
   पोस्ट डॉक्टरल फैलो, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग,
   राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

8. **डॉ. बुद्धि प्रकाश गोस्वामी**
   प्राध्यापक
   वसुंधरा महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, अचरोल, जयपुर (राज.)

9. **डॉ. प्रियंका माथुर**
   समाजशास्त्र विभाग
   राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

सम्पादकीय

धार्मिक जनगणना के निहितार्थ

पहली बार हिन्दुस्तान में हिन्दुओं की जनसंख्या देश की कुल जनसंख्या में 80 प्रतिशत से कम रह गयी है। सन् 2011 में हुई जनगणना के धार्मिक जनसंख्या संबंधी आंकड़े अगस्त, 2015 में जारी करने पर यह तथ्य सामने आया। सन् 1991-2001 के दशक में हिन्दुओं की दशकीय वृद्धि दर 19.9 प्रतिशत तथा मुसलमानों की 29.3 प्रतिशत थी। 2001-2011 के दशक में हिन्दुओं की दशकीय वृद्धि दर 16.8 प्रतिशत की तुलना में मुसलमानों की वृद्धि दर 24.6 प्रतिशत रही। यानि हर दशक में मुसलमानों की जनसंख्या वृद्धि दर हिन्दुओं से डेढ़ गुणा रही। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत की सम्पूर्ण आबादी में हिन्दुओं का हिस्सा 0.7 प्रतिशत कम होकर 79.8 प्रतिशत ही रह गया, वहीं मुसलमानों का प्रतिशत 0.8 प्रतिशत बढ़कर 14.2 प्रतिशत हो गया। अब यह बात तो दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है कि देश की कुल आबादी में हिन्दुओं का हिस्सा लगातार घट रहा है तथा मुसलमानों का प्रतिशत लगातार बढ़ रहा है।

मिजोरम तथा नागालैण्ड जैसे ईसाई बहुल राज्यों में भी मुस्लिम जनसंख्या की वृद्धि दर आश्चर्यजनक रूप से बढ़ी है। गत दशक में यह क्रमश: 46.9 प्रतिशत तथा 39.9 प्रतिशत रही। मुस्लिम जनसंख्या की वृद्धि हरियाणा में 45.7 प्रतिशत, चंडीगढ़ में 44.7 प्रतिशत, पंजाब में 40.2 प्रतिशत, उत्तराखण्ड में 39 प्रतिशत, दिल्ली में 33 प्रतिशत, राजस्थान में 29.8 प्रतिशत, असम में 29.6 प्रतिशत, बिहार में 28 प्रतिशत तथा गुजरात में 27.3 प्रतिशत रही जो इन राज्यों में हिन्दुओं की वृद्धि दर से बहुत ज्यादा है। देश की जनता को सम्भवत: जानकारी नहीं है कि असम के 27 जिलों में से नौ जिलों में मुस्लिम आबादी 50 प्रतिशत से भी कहीं ज्यादा हो चुकी है। कुछ जिलों में तो मुस्लिम एवं हिन्दू जनसंख्या में बहुत अन्तर हो गया है। उदाहरण के लिए धुबड़ी जिले में 15.5 लाख मुसलमानों की तुलना में हिन्दू मात्र 3.88 लाख ही रह गए हैं। बरपेटा जिले में भी जहाँ मुस्लिम आबादी 11.98 लाख है वहीं हिन्दू आबादी मात्र 4.92 लाख ही है। असम में बांग्लादेश से बड़ी संख्या में घुसपैठ जारी है। 1998 में असम के तत्कालीन राज्यपाल श्री एस.के. सिन्हा ने अपनी एक रिपोर्ट में चेतावनी दी थी कि यदि इसी तरह बांग्लादेशीय मुसलमानों की घुसपैठ से असम पर होने वाले गुपचुप जनसंख्यात्मक आक्रमण (Demographic invasion) को नहीं रोका गया तो निचले असम के जिले भारत के हाथ से निकल जाने जैसा दु:खद परिणाम हो सकता है।

कई लोगों का तो मानना है कि मुस्लिम समुदाय की वास्तविक आबादी जनगणना के आंकड़ों की तुलना में कहीं ज्यादा है। उनके अनुसार मुसलमानों की घनी आबादी वाले इलाकों में जनगणना कर्मियों को प्रवेश करने ही नहीं दिया गया ताकि जनगणना में मुस्लिम जनसंख्या बहुत बढ़ी हुई न दिखे। (दृष्टि।। करेंट अफेयर्स टूडे : अक्टूबर, 2015 पृष्ठ 48) बांग्लादेश से भारत में घुसपैठ करने वाले मुसलमानों में भी ऐसी प्रवृत्ति रहती है कि भारत में सुविधा प्राप्त करने के लिए वे अपने को हिन्दू बता देते हैं।

मुस्लिम समुदाय की जनसंख्या अधिक तेजी से बढ़ने के क्या कारण हो सकते हैं? क्या इसका संबंध इस्लाम धर्म से है, जहाँ परिवार नियोजन उनके धर्मगुरुओं द्वारा नकारा जा रहा है। कई लोग इसका कारण मुसलमानों का सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन मानते हैं। परन्तु केरल में जहाँ सामान्यतया मुसलमान शिक्षित एवं समृद्ध हैं, वहाँ भी केरल के सम्पूर्ण आबादी में मुसलमानों का हिस्सा 24.7 प्रतिशत से बढ़कर 26.6 प्रतिशत हो गया है। केरल का मल्लापुरम जिला पहले से ही मुस्लिम बहुल बना हुआ है।

मुसलमानों की जनसंख्या वृद्धि के लिए कई लोग 'लव-जिहाद' तथा हिन्दुओं से मतांतरण (Conversion) को भी मानते हैं। मुसलमानों की भारत में जनसंख्या अधिक बढ़ने का एक बड़ा कारण बांग्लादेश से होने वाली मुस्लिम घुसपैठ भी है।

देश की कुल जनसंख्या में ईसाई समुदाय का हिस्सा 2.3 प्रतिशत लगातार दो दशकों से बना हुआ है, इसके बावजूद कि उन पर हिन्दुओं से मतांतरण कराने की बात कही जाती रही है। उनके सबसे बड़े धार्मिक गुरु पोप के भारत आगमन पर घोषित रूप से दक्षिण एशिया में अपनी संख्या बढ़ाने का लक्ष्य तय किया गया था। ईसाई मिशनरीज का जोर हिन्दुओं की जनजातियों तथा अनुसूचित जातियों से मतान्तरण कराने का रहता है। इन जातियों के लोग जब तक हिन्दू रहते हैं उन्हें आरक्षण का लाभ मिलता रहता है। इसलिए आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, तेलंगाना सहित दक्षिण के राज्यों में ऐसे मतांतरित ईसाईयों की संख्या लाखों में है जिनका आचरण ईसाईयों का है परन्तु वे सरकारी कागजों में तथा जनगणना में अपने को हिन्दू लिखाते हैं ताकि आरक्षण का लाभ बना रहे। इन्हें क्रिप्टो क्रिश्चियन कहा जाता है। गत कुछ वर्षो से अनेक हिन्दू संगठनों के प्रयास से लोग जागरूक हो रहे हैं। अनेक गाँवों ने तय किया है कि उनके यहाँ अब किसी हिन्दू का मतांतरण नहीं करने देंगे। शायद इस कारण से भी हिन्दू से ईसाई बनने की गति में कमी आयी है।

जो भी हो, धार्मिक जनसंख्या संबंधी आंकड़ों पर शांत मन से विचार कर इनके निहितार्थ खोजने की आवश्यकता है। क्या यह उचित अवसर नहीं है कि सभी समुदायों को परिवार-नियोजन से जोड़ा जाय। भारत के सभी नागरिकों पर समान जनसंख्या नीति लागू की जाय। बांग्लादेश से होने वाली घुसपैठ पर भी पूरी तरह से रोक लगाना आवश्यक है। लालच, दबाव, भय से मतांतरण करने पर प्रतिबन्ध संबंधी कानून सभी राज्यों में बने या कोई ऐसा केन्द्रीय कानून बनाया जाय। समान नागरिक संहिता संबंधी संविधान के निर्देशों की पालना की जाय ताकि 'एक देश, एक लोग' का संवैधानिक लक्ष्य वास्तव में पूरा हो सके।

– रामस्वरूप अग्रवाल